अदम्य आशा में नवजीवन सृजन-मंत्र

योगेन्द्र नाथ शर्मा

कहते हैं 'जब तक सांस, तब तक आस' अर्थात जीवन में जब तक आशा यानी शुभ के होने का विश्वास बना रहता है, तब तक आदमी जीवन में हिम्मत नहीं हारता और जैसे ही उसकी आशा टूटती है, वैसे ही आदमी जीवन खो बैठता है। 'रामचरित मानस' में महाकवि संत तुलसीदास ने तो आशा, विश्वास और निष्ठा की शक्ति को आदमी का सबसे बड़ा संबल मानते हुए लिखा भी है–

'एक भरोसा, एक बल, एक आस, विश्वास।

एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास।'

लोकजीवन में तो एक प्रसिद्ध हरेक व्यक्ति को बोलते हुए आपने सुना ही होगा कि 'डूबते हुए को तिनके का सहारा' अर्थात जब आदमी घोर संकटों में घिर जाता है,तब उसे अगर तिनके के बराबर भी कोई आशा की किरण दिख जाती है तो वह घोरतम संकट से भी जूझ सकता है। आज इसी प्रकरण से जुड़ी एक बहुत ही प्यारी और रोचक-सी बोधकथा इस प्रकार है–

एक बार चार बुढ़ियाएं आपस में बहस करने लगीं। उनमें विवाद का विषय था कि 'हम में बड़ी कौन है ' काफी देर तक आपस में बहस करते-करते जब वे चारों थक गयीं, तो उन्होंने तय किया कि उनके पड़ोस में जो नयी बहू ब्याह कर हाल में ही आयी है, उसके पास चलकर अपनी इस समस्या का फैसला कराया जाए। अब क्या था, चारों उठकर नई नवेली बहू के पास पहुंच गयीं और बड़े ही प्यार से बोलीं–'बहू-बहू! हमारा फैसला कर दो कि हम में से कौन बड़ी है '

अचंभित-सी बहू ने कहा कि पहले आप चारों एक-एक करके मुझे अपना-अपना परिचय तो दो, तभी तो मैं कोई फैसला दे पाऊंगी

पहली बुढ़िया ने कहा–बेटी, मैं भूख मैया हूं, मेरे से संसार में हर कोई डरता है। तो हुई न मैं ही बड़ी गंभीर होकर बहू ने कहा–'देखो भूख मैया, आप का विकल्प संसार में विद्यमान है। छप्पन व्यंजनों से भी भूख मिट सकती है और एक बासी रोटी से भी आदमी को तृप्ति मिल सकती है।'

तब दूसरी बुढ़िया ने कहा–'सुन बेटी, मैं प्यास मैया हूं, दुनिया में मेरा बोलबाला है। कोई ऐसा नहीं है,जो मुझसे पर पा सके। बोलो, मैं ही बड़ी हूं न 'बहू ने पहले की ही तरह सोचते हुए कहा–'देखो प्यास मैया, आपका भी संसार में विकल्प मौजूद है। प्यास गंगाजल और मधुर-मधुर रस से भी शान्त हो जाती है और बुरे वक्त पर तालाब का गन्दा पानी पीने से भी प्यास बुझ जाती है।'

अब चहकते हुए तीसरी बुढ़िया ने कहा–'सुन मेरी प्यारी बेटी, मैं ही नींद मैया हूं। मुझे तो पूरी दुनिया सबसे ज्यादा चाहती है। तुम भी मुझे ही बड़ी मानोगी। बोलो, मैं ही संसार मे सबसे बड़ी हूं न ' अब भी बहू ने उसी गंभीरता से कहा–'सुनो, नींद मैया, कुछ भी कहो, विकल्प तो आपका भी दुनिया में है। नींद तो सुकोमल और मखमली सेज पर भी आती है, किन्तु आड़े वक्त पर लोग कंकड़-पत्थर पर भी गहरी नींद में सो जाते हैं।'

अन्त में बड़ी ही कोमल आवाज़ में चौथी बुढ़िया ने कहा–'बेटी, मैं आस मैया हूं। सारे संसार को जीवन की आस बंधाया करती हूं। तुम ही कहो,मैं बड़ी हूं न '

बहू ने बढ़कर उसके पैर छू कर कहा–'सचमुच मैया, पूरे संसार में आशा का कोई विकल्प नहीं है। आशा हो तो मनुष्य सौ बरस भी जीवित रह सकता है, किन्तु यदि आशा टूट जाए तो आदमी जीवित ही नहीं रह सकता, भले ही उसके घर में करोड़ों की धन-दौलत भरी हो, अथाह सोना,चांदी और हीरे-जवाहरात भरे पड़े हों।'

नि:संदेह, यह बोधकथा हमें जीवन के उस सब से बड़े अमृत का पता दे रही है, जिसे संसार 'आशा' कह कर संबोधित करता आया है। कितनी बार युद्धों की विभीषिका में लोगों का सब कुछ उजड़ गया, लेकिन उन के मन में जीने की आशा बनी रही और इसी अदम्य आशा ने नया सृजन-मंत्र आदमी को दिया, तो उजड़ी हुई दुनिया फिर से बस गई।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो पूरी दुनिया को नवनिर्माण का संदेश देते हुए कहा है–

'नर हो न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।'

बड़े-बूढ़ों ने सदा निराशा के क्षणों में युवाओं के मन में प्रेरणा की लौ जगाने के लिए यही कहा है–'जब कभी एक दरवाजा बंद होता है, तो कहीं न कहीं दस दरवाज़े किस्मत खुद ही खोल देती है।' एक शायर ने तो बहुत बड़ी बात कही है, जिसे कभी भूलना नहीं चाहिए–

'गिरते हैं शह सवार ही, मैदाने जंग में,
वो तिफ़्ल क्या गिरेंगे जो घुटनों के बल चले।'

संपादकीय

तेरी जेब पर लगी सरकारी नज़र

दुनिया पानी है। आनी-जानी है। गीता का सार है प्राणी, जो आज तेरा है, कल किसी और का था और कल किसी और का होगा। इसलिए शोक मत कर। सुबह कमा और शाम को खा। मजदूर हो जा। संचय करने में कुछ नहीं रखा। उधार की कार ले। उधारी का सैर-सपाटा कर। होटल में उधारी का डिनर कर। बड़े-बुजुर्ग सार की बात कह गए हैं–ऋणम कृत्वा घृतम पिबेत! हे प्राणी, देख तेरे लिए बैंकों के दरवाजे 24म7 में खुले हैं। कभी भी, कहीं भी तू बैंक जा सकता है। जा घुस जा और हंसता-मुस्कुराता सा वापस लौट जा अपने घर। घी लगी रोटी खा। पलंग पर चित लेट, लम्बी डकार ले और लम्बे विलम्बित खर्राटे भर। इतने लम्बे कि पड़ोसी भी जाग जाए।

देख तेरे लिए इतने बड़े-बाजार हैं। बड़े-बड़े मॉल खुले हैं। बाजार इतने बढ़े हैं कि तेरे आंगन तक आ जाएंगे। सरकार और क्या कर सकती है? तेरे लिए सरकार है, तेरे से सरकार है और तेरी सरकार है। अपनी बनायी कृति से तू प्यार कर। तेरी जेब में जो नोट है ना, सरकार ने देख लिया है। इसलिए बजट में कैंची का प्रावधान नहीं किया है। रे प्राणी, कैंची से न डर। पुराने लिखे पर मिट्टी डाल।

कभी किसी सिरफिरे ने लिख दिया था-उधार प्रेम की कैंची है! इसलिए सरकार ने बजट में कैंची का प्रावधान नहीं किया है। ब्लेड पर ध्यान दिया है। काटने वाली चीजों पर कर नहीं लगाया है। ब्लेड सरकारी है। केवल सरकार इसका इस्तेमाल कर सकती है। बाकी कैंची और उस्तरा, बाजार के हाथ में है।

देख तेरी खातिर सरकार ने जेबकतरों का सरेंडर करवा दिया है। उस्तरा और ब्लेड छीन लिए हैं। वे भी निहत्थे हैं। कहीं कोई नजर आए तो हमें बताना जरूर। हॉलांकि अब वे हाट बाजार में नहीं दिखते। उनके गले में बंधे रूमाल छीन लिए गए हैं। उनके पास तो अब पान खाने के पैसे भी नहीं बचे हैं। इसलिए तू उनकी तरफ से बेफ्रिक हो जा। तेरी जेब अब सरकारी है। कितना ही तू दबा ले मगर नोट तो रहेगा नहीं तेरी जेब में।

कुएं का पानी है। इसलिए अब तो तेरे गाने के दिन हैं। गा तू। गीत गोविंद गा। सब छोड़कर भजन मण्डली में शामिल हो जा। नोट कुएं में जाएगा ही जाएगा। कभी तेरा था ही नहीं, कभी तेरा होगा नहीं। बस कुछ घड़ी का मेहमान है। मौज कर ले। दुनिया पानी है। आनी-जानी है। पैसा क्या है, हाथ का मैल! ऊंगली से हथेली रगड़! देख मैल निकलता है कि नहीं? मैल निकाल, मल-मल के। और सुन ज्ञानी कह गए हैं–माया महाठगनी! इसलिए खुशी-खुशी अपनी जेब सरकार के हवाले कर दे। यही सार है गीता का।

सू- दोकू क्र.064

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.63 का हल

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2

सरोकार : पति या पार्टनर ही सबसे बड़े दुश्मन

माशा

यूके में 2018 में महिला हत्याओं के आधे से अधिक मामलों में मौजूदा या पूर्व पार्टनर शामिल थे।

यूके में हर साल फेमिसाइड्स यानी महिलाओं की हत्या पर अध्ययन किया जाता है। 2018 के अध्ययन में बताया गया है कि उस साल 149 औरतों की हत्या हुई। इनमें 61 फीसद की हत्या करने वाला उनका पति या ब्वॉयफ्रेंड था। यों घरेलू हिंसा की शिकार दुनिया भर की औरतें होती हैं। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन, डिपार्टमेंट ऑफ रिप्रोडक्टिव हेल्थ एंड रिसर्च के 2013 के आंकड़े कहते हैं कि दुनिया भर की 35 फीसद महिलाओं को अपने अंतरंग साथी की यौन या शारीरिक हिंसा का शिकार होना पड़ता है। कुछ देशों में तो 70 फीसद महिलाओं को यह यातना झेलनी पड़ती है। ऐसी महिलाओं की गर्भपात कराने या तनाव में जाने की आशंका दो गुनी और एचआईवी-एड्स का शिकार होने की आशंका डेढ़ गुनी ज्यादा होती है।

इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र कहता है कि हालांकि मनोवैज्ञानिक हिंसा पर आंकड़े कम ही मिलते हैं, फिर भी अनुमान है कि यूरोपीय संघ के 28 देशों में 43 फीसद महिलाओं को किसी न किसी प्रकार के मनोवैज्ञानिक शोषण का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त विश्व की 70 करोड़ महिलाओं की शादियां 18 वर्ष से कम उम्र में कर दी जाती हैं।

इतनी उम्र में यौन संबंध से इनकार नहीं कर पातीं। नतीजा, कम उम्र में गर्भधारण और यौन संक्रमण होता है। यूएन वीमेन का आंकड़ा यह भी कहता है का विश्व स्तर पर 12 करोड़ लड़कियों को जबरन यौन संबंध के लिए मजबूर किया जाता है। इसका देह और मन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अंदाजा लगाने के लिए भी संयुक्त राष्ट्र तथ्य प्रस्तुत करता है। इसी साल जीरो टॉलरेंस फॉर वीमेन जेनिटल म्यूटिलेशन पर संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय दिवस पर जारी रिपोर्ट में कहा गया कि विश्व की लगभग 20 करोड़ महिलाओं को यौन हिंसा के कारण अपनी देह खासकर जननांगों के क्षत-विक्षत होने की यंतण्रा झेलनी पड़ती है। बहुत से देशों में पांच साल से छोटी लड़कियां भी इस तकलीफ से गुजरती हैं।

भारत में महिलाओं की हालत बदतर है। इसके बावजूद कि यहां वह शक्ति के रूप में उपास्य है। स्त्री के हर रूप को आदर से देखा जाता है-चाहे वह मां हो, बहन या बेटी। किंतु अपराध और हिंसा का शिकार भी उन्हें सबसे ज्यादा होना पड़ता है। दिनोंदिन महिलाओं के लिए असुरक्षित होते जा रहे उप्र में अपराध का ग्राफ भी तेजी से बढ़ा है। 2015 में यह आंकड़ा 35,908 था जो 2016 में करीब 11 फीसद से भी अधिक बढ़ा और अपराध की संख्या बढ़कर 49,262 पर पहुंची जबकि 2017 में महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। आंकड़ा 56,000 पर पहुंच गया है। देश में महिलाओं के साथ हिंसा में अकेले यूपी का 15.6 फीसद का योगदान रहा। महाराष्ट्र 8.9 फीसद और मध्य प्रदेश 8.3 फीसद का योगदान है।

एमनेस्टी इंटरनेशनल कहता है कि महिलाओं और बच्चियों के खिलाफ की हिंसा मानवाधिकार का सबसे बड़ा उल्लंघन है। दमन की दास्तां किसी एक देश की आपबीती नहीं है। इसका हल क्या है? इंडियन ह्यूमन डवलपमेट सर्वे कहता है कि औरतों को आत्मनिर्भर बनने दीजिए। उनकी संवेदनशीलता कम करने का सबसे अच्छा तरीका है कि वे घर से बाहर निकलें और काम करें। बाहरी दुनिया से संपर्क बढ़ेगा तो खुद को संभालने में सक्षम होंगी। मनोवैज्ञानिक रूप से ताकतवर भी।